पाठ 7

जूलिया

(प्रस्तुत एकांकी में एक भोली-भाली गवर्नेस (सेविका) की मार्मिक पीड़ा और विवशता का सजीव चित्रण है, वहीं दूसरी ओर शोषण से मुक्ति पाने का प्रभावी संदेश भी है।)

(बच्चों की गवर्नेस जूलिया वासिल्देवना आती है)
जूलिया- (दबे स्वर में) आपने मुझे बुलाया था मालिक?
गृहस्वामी- हाँ हाँ.....बैठ जाओ जूलिया.....खड़ी मत रहो।
जूलिया- (बैठती हुई) शुक्रिया।
गृहस्वामी- हाँ तो जूलिया, मैं तुम्हारी तनख्वाह का हिसाब करना चाहता हूँ। मेरे ख्याल से तुम्हें पैसों की जरूरत होगी; और जितना मैं तुम्हें अब तक जान सका हूँ, मुझे लगता है कि तुम अपने आप पैसे कभी नहीं माँगोगी। इसलिए मैं खुद ही तुम्हें पैसे देना चाहता हूँ। हाँ तो तुम्हारी तनख्वाह तीस रूबल महीना तय हुई थी न?
जूलिया- (विनीत स्वर में) जी नहीं मालिक, चालीस रूबल।
गृहस्वामी- नहीं भाई, तीस ..... ये देखो डायरी (पन्ने पलटते हुए) मैंने इसमें नोट कर रखा है। मैं बच्चों की देखभाल और उन्हें पढ़ाने वाली हर गवर्नेस को तीस रूबल महीना ही देता हूँ। तुम से पहले जो गवर्नेस थी, उसे भी मैं तीस रूबल महीना ही देता था। अच्छा, तो तुम्हें हमारे यहाँ काम करते हुए दो महीने हुए हैं।
जूलिया- (दबे स्वर में) जी नहीं, दो महीने पाँच दिन।
गृहस्वामी- क्या कह रही हो जूलिया? ठीक दो महीने हुए हैं। भाई, मैंने डायरी में सब नोट कर रखा है। हाँ, तो दो महीने के बनते हंै- अंऽऽ.....साठ रूबल। लेकिन साठ रूबल

तभी बनतें हैं जब महीने में तुमने एक दिन भी छुट्टी न ली हो.... तुमने इतवार को छुट्टी मनायी है। उस दिन तुमने कोई काम नहीं किया। सिर्फ कोल्या को घुमाने के लिए ले गयी हो....और ये तो तुम भी मानोगी कि बच्चे को घुमाने ले जाना कोई काम नहीं होता. ... इसके अलावा, तुमने तीन छुट्टियाँ और ली हैं। ठीक है न?

जूलिया- (दबे स्वर में) जी, आप कह रहे हैं तो.....ठीक..... (रुक जाती है)

गृहस्वामी- अरे भाई.... मैं क्या गलत कह रहा हूँ.....हाँ तो नौ इतवार और तीन छुट्टियाँ- यानी बारह दिन तुमने काम नहीं किया- यानी तुम्हारे बारह रूबल कट गए। उधर कोल्या चार दिन बीमार रहा और तुमने सिर्फ वान्या को ही पढ़ाया। पिछले हफ्ते शायद तीन दिन दाँतों में दर्द रहा था और मेरी पत्नी ने तुम्हें दोपहर बाद छुट्टी दे दी थी। तो बारह और सात-उन्नीस। उन्नीस नागे। हाँ तो भई, घटाओ साठ में से उन्नीस.....कितने रहते हैं...अम्....इकतालीस,....इकतालीस रूबल ! ठीक है?.....

जूलिया- (रुआँसी हो जाती है। रोते स्वर में) जी हाँ।

गृहस्वामी- (डायरी के पन्ने उलटते हुए) हाँ, याद आया...पहली जनवरी को तुमने चाय की प्लेट और प्याली तोड़ी थी। प्याली बहुत कीमती थी। मगर मेरे भाग्य में तो हमेशा नुकसान उठाना ही बदा है।.....मैंने जिसका भला करना चाहा, उसने मुझे नुकसान पहुँचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है.....खैर मेरा भाग्य !....हाँ, तो मैं प्याली के दो रूबल ही काटूँगा...अब देखो उस दिन तुमने ध्यान नहीं दिया और तुम्हारी नजर बचाकर कोल्या पेड़ पर चढ़ गया और वहाँ किसी टहनी की खरोंच लगने से उसकी जैकेट फट गयी। दस रूबल उसके गये। इसी तरह तुम्हारी लापरवाही की वजह से घर की सफाई करने वाली नौकरानी मारिया ने वान्या के नये जूते चुरा लिये.... (रुक कर) तुम मेरी बात सुन भी रही हो या नहीं?

जूलिया- (मुश्किल से अपनी रुलाई रोकते हुए) जी सुन रही हूँ।

गृहस्वामी- हाँ ठीक है। अब देखो भाई, तुम्हारा काम बच्चों को पढ़ाना और उनकी देखभाल करना है। तुम्हें इसी के तो पैसे मिलते हैं। तुम अपने काम में ढील दोगी तो पैसे कटेंगे या नहीं?..मैं ठीक कह रहा हूँ न ! ..... तो जूतों के पाँच रूबल और कट गये.... और हाँ, याद आया, दस जनवरी को मैंने तुम्हें दस रूबल दिये थे.....।

जूलिया- (लगभग रोते हुए) जी नहीं, आपने कुछ नहीं...(आगे नहीं कह पाती)

गृहस्वामी- अरे मैं क्या झूठ बोल रहा हूँ ? मंै डायरी में हर चीज नोट कर लेता हूँ। तुम्हें यकीन न हो तो दिखाऊँ डायरी? (डायरी के पन्ने यूँ ही उलटने लगता है)
जूलिया- (आँसू पांेछती हुई) आप कह रहे हैं तो आपने दिये ही होंगे।
गृहस्वामी- (कड़े स्वर में) दिये होंगे नहीं-दिये हैं....तो ठीक है। घटाओ सत्ताईस, इकतालीस में से.... अम्....अम्.... बचे चैदह। क्यों हिसाब ठीक है न ?
जूलिया- (आँसू पीती हुई) (काँपती आवाज में) मुझे अभी तक एक ही बार कुछ पैसे मिले थे और वो मुझे मालकिन ने दिये थे.....सिर्फ तीन रूबल। ज्यादा नहीं।
गृहस्वामी-(जैसे आसमान से गिरा हो) अच्छा !.....और इतनी बड़ी बात तुम्हारी मालकिन ने मुझे बतायी तक नहीं !.....देखो, तुम न बताती तो हो जाता न अनर्थ !..... खैर, देर से ही सही.....मैं इसे भी डायरी में नोट कर लेता हूँ...(डायरी खोलकर उसमें यूँ ही कुछ लिखता है) हाँ तो, चैदह में से तीन और घटा दो-बचते हैं, ग्यारह रूबल! (जेब से निकालकर) तो लो भाई, ये रही तुम्हारी तनख्वाह..... ये रहे ग्यारह रूबल (देते हुए) सँभाल लो..... गिन लो, ठीक है न?
जूलिया- (काँपते हाथों से रूबल लेती है। काँपते ही स्वर में) जी धन्यवाद !
गृहस्वामी- (सोफे से उछलकर खड़ा हो जाता है और भारी आवाज करता हुआ कमरे में क्रुद्ध शेर की तरह एक-दो चक्कर लगाता है) 'धन्यवाद !'..... जूलिया तुमने 'धन्यवाद' कहा न !.....(गुस्से से) धन्यवाद किस बात का?
जूलिया- आपने मुझे पैसे दिये- इसके लिए धन्यवाद।
गृहस्वामी- (अपना गुस्सा नहीं सँभाल पाता) (ऊँचे स्वर में लगभग चिल्लाते हुए), तुम.....तुम मुझे धन्यवाद दे रही हो जूलिया? जब कि तुम अच्छी तरह जानती हो कि मैंने तुम्हें ठग लिया है....तुम्हें धोखा दिया है..... तुम्हारे पैसे हड़प लिये हैं....और तुम...तुम इसके बावजूद तुम मुझे धन्यवाद दे रही हो ! (गुस्से में आवाज काँपने लगती है)
जूलिया- जी हाँ मालिक....
गृहस्वामी- (गुस्से से तुतलाने लगता है) 'जी हाँ मालिक ! जी हाँ मालिक ! .....क्यों? क्यों जी हाँ मालिक?
जूलिया- (डर जाती है भयभीत स्वर में) क्योंकि इससे पहले मैंने जहाँ-जहाँ काम किया, उन लोगों ने तो मुझे एक पैसा तक नहीं दिया.....आप कुछ तो दे रहे हैं।

गृहस्वामी- (क्रोध के कारण काँपते, उत्तेजित स्वर में) उन लोगों ने तुम्हें एक पैसा तक नहीं दिया जूलिया, मुझे ये बात जानकर जरा भी आश्चर्य नहीं हो रहा है.....(स्वर धीमा कर) जूलिया, मुझे इस बात के लिए माफ कर देना कि मैंने तुम्हारे साथ एक छोटा-सा क्रूर मजाक किया.....पर मैं तुम्हें सबक सिखाना चाहता था। देखो जूलिया, मैं तुम्हारा एक पैसा नहीं मारूँगा...(जेब से निकाल कर) ये हैं तुम्हारे अस्सी रूबल !..... मैं अभी इन्हें तुम्हें दँूगा.....लेकिन इससे पहले मैं तुमसे कुछ पूछना चाहँूगा-'जूलिया, क्या ये जरूरी है कि इनसान भला कहलाने के लिए, इतना दब्बू, भीरु और बोदा बन जाये कि उसके साथ जो अन्याय हो रहा है, उसका विरोध तक न करे? बस, खामोश रहे और सारी ज्यादतियां सहता जाए ? ..... नहीं जूलिया, नहीं .....इस तरह खामोश रहने से काम नहीं चलेगा । अपने को बचाए रखने के लिए, तुम्हें इस कठोर, क्रूर, निर्मम और हृदय हीन संसार से लड़ना होगा | अपने दांतो और पंजों के साथ लड़ना होगा पूरी शक्ति के साथ.....मत भूलो जूलिया, इस संसार में दब्बू और रीढ़रहित लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है.... कोई स्थान नहीं है |

-अन्तोन चेखोव

शब्दार्थ

गवर्नेस = सेविका, जो छोटे बच्चों की शिक्षा के साथ-साथ उनकी देखरेख भी करती हो। रूबल = रूस की मुद्रा । भीरू = डरपोक | बोदा = मोटी अक्ल का | क्रूर = निर्दय | निर्मम = ममता रहित, कठोर |

प्रश्न अभ्यास

कुछ करने को

1. (बैठती हुई), (दबे स्वर में), (रुआंसी होकर), (डायरी के पन्ने पलटते हुए)..... जैसे भाव व दृश्य के संकेत एकांकी के बीच बीच में दिए गए हैं जिनसे एकांकी के मंचन में

मदद मिलती है | इसी प्रकार के भाव्- दृश्य संकेतों का प्रयोग करते हुए मां और पुत्र में बातचीत के आधार पर एक लघु एकांकी की पटकथा तैयार कीजिए |

2. निम्नांकित प्रारूप के आधार पर तनख्वाह की कटौती का विवरण तैयार कीजिए -

क्रमांक	कारण	काटी गयी धनराशि (रूबल में)
i.	नौ इतवार	9 रूबल
....	.....	.....
.....	.....	.....

अपने उत्तर का मिलान पाठ में की गई कुल कटौती से कीजिए |

3. घर में भी आपके माता-पिता घर की तमाम चीजों का हिसाब किताब रखते होंगे | बताइए कि वह घर पर विभिन्न प्रकार के हिसाब किस किस प्रकार तैयार करते हैं ? आप इसमें उनकी क्या मदद करते हैं ?

4.रूस की मुद्रा रूबल है इसी प्रकार बांग्लादेश चीन अमेरिका जापान और पाकिस्तान की मुद्रा के बारे में पता कीजिए |

5. इस एकांकी का कक्षा में मंचन कीजिए।

6. एकांकी की कहानी को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए।

विचार और कल्पना

1.‘‘इससे पहले मैंने जहाँ-जहाँ काम किया, उन लोगों ने तो मुझे एक पैसा तक नहीं दिया, आप कुछ तो दे रहे हैं।’’ इस वाक्य के भाव के आधार पर बताइए कि जूलिया ने किस-किस तरह के लोगों के बीच गवर्नेंश का काम किया होगा ?

2. यदि इन लोगों कि जगह आप होते तो जूलिया को पैसें देते अथवा नही ? क्यों ?

3. यदि आप जूलिया के स्थान पर होते तो ऐसे लोगों से कैसा व्यवहार करते ?

एकांकी से

1. गृहस्वामी ने 'उन्नीस नागे' किस प्रकार गिनाये और इसके लिए कितने रूबल की कटौती की?
2. गृहस्वामी के अनुसार जूलिया के कारण क्या-क्या नुकसान हुआ था?
3. गृहस्वामी ने सत्ताइस रूबल किस आधार पर काट लिये थे?
4. गृहस्वामी को अंत में जूलिया पर गुस्सा क्यों आया और उसने जूलिया को क्या समझाया?
5. 'इस संसार में दब्बू और रीढ़रहित लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है' इस वाक्य का आशय स्पष्ट कीजिए।
6. एकांकी के कौन से संवाद आपको सबसे अच्छे लगे, क्यों ?

भाषा की बात

1. पाठ में अनेक जगहों पर अंग्रेजी तथा अरबी-फारसी के शब्द आये हैं, जैसे- गवर्नेस, तनख्वाह। इसी प्रकार के अन्य शब्दों को पाठ से छाँटकर उनका वर्गीकरण कीजिए।
2. रीढ़रहित का अर्थ है 'रीढ़ से हीन' इसका विपरीतार्थक अर्थ होगा- 'रीढ़युक्त'। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में 'रहित' और 'युक्त' लगाकर शब्द बनाइए-
प्राण, धन, बल, यश।
3. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए-
अन्याय, क्रूर, मूर्ख, दुर्बल, करुण।